# साहित्य रत्न

## (जुलाई 2023)


प्रधान संपादन-
सुरजीत मान जलईया सिंह

संपादक-
राम अवतार बैरवा

उपसंपादक-
डॉ कुशलपाल सिंह



9997111311

साहित्य रत्न

वेबसाइट- sahityaratan.com

# अनुक्रमणिका

साहित्य रत्न जुलाई **2023** वर्ष**1** अंक**3**

संपादकीय

कविताओं के बीच आईनाःरामअवतार बैरवा

कथा साहित्य

1- संस्कृति के संरक्षण में आकाशवाणी की भूमिकाःकीर्ति बैद

2- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भारतीय भाषाओं सम्बन्धी अनु**शंसा**एं**-** सरिता

3- कन्यादान किसका और क्यों**-**निंशा नंदिनी भारतीय

4- उधार**-**भास्कर सिंह माणिक

5- रसूख़दारःसुरजीत मान जलईया सिंह

6- देवदासीः सुवर्णा परतानी

7- मीरजापुर के इतिहास में पण्डित राम गरीब चौबे की भूमिका **: -**प्रवीण कुमार मिश्र **'**वशिष्ठ**'**

काव्यलोक

8- साग़र भरने वालेःनिधि भार्गव मानवी

9- भीतरःराजीव डोगरा

10- साहूकार ब**ड़े** हैं**:** मृदुल कुमार सिंह

11- रिश्तेःनंदिनी चौहान

12- ख्यालों में देखाःप्रीती श्रीवास्तव

13- सामाजिक शोषणःपूजा अग्रवाल

14- मैं कवि हूं जग के मजलूमों काःअमरेन्द्र

15- मुस्कराना सीखीएःरामावतार सागर

16- नमन हैःसंतोष कुमार अजूबा

17- प्रश्न और उत्तरःराजकुमार जैन राजन

18- मानवता का पद बड़ाःसुनील चौरसिया सावन

19- उद्बोधनः सत्येन्द्र नारायण सिंह

# कविताओं के बीच आईना

हर साहित्यकार अपने लेखन का आरम्भ कविताओं से करता है . ये भी माना जा सकता है कि कविता ही साहित्य की बुनियाद है . कवि होना सौभाग्य भी माना गया है । संसद से लेकर राजपथ और न्यायालयों में कविताओं से दिल जीत लेने की चर्चाएँ आम हैं । कविता और शायरी में वो ताकत होती है कि उसके बाद कुछ भी कहने की गुंजाइश रह नहीं जाती । संसद में कई सदस्य बहुत कम उम्र में बतौर कवि मनोनीत हुए हैं । बड़ी बात यह भी है कि उनकी बात सब मन से सुनते थे, हैं और तवज्जो भी देते थे, हैं । महत्वपूर्ण मुद्दों पर इनकी बात को अंतिम भी माना जाता रहा है । अगर आज हिन्दी कवियों की बात की जाए तो कौन - कौन बड़े कवि हैं जो वहां तक पहुँचने की हैसियत रखते हैं ? हम बमुश्किल पांच नाम तो गिना सकते हैं पर छठे के लिए बहुत ज्यादा सोचना पड़ेगा । जब कि आज़ादी से लेकर अस्सी - नब्बे के दशक तक हर तीसरा बड़ा कवि संसद में पहुंचने की हैसियत रखता था । क्या यह मान लिया जाए कि कविता खत्म हो गयी है ? मुझसे कई बार लोग दस युवा कवियों का नाम मांगते हैं . पांच के बाद मेरी कलम ठहर जाती है । अगर पचास की उम्र के कवियों की बात की जाए तो अधिकाँश की कवितायें आपस में मिलती - झुलती- सी दिखाई पड़ती हैं ।

'एक आदमी रोटी बेलता है,

एक आदमी रोटी खाता है।

एक तीसरा आदमी भी है,

जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है ।

वह सिर्फ रोटी से खेलता है।

मैं पूछता हूं, यह तीसरा आदमी कौन है ?

इस पर मेरे देश की संसद मौन है.'

या

"जब सारा जीवन बीत गया वनवासी जीवन को ढोते,

तब पता चला इस दुनिया में सोने के हिरण नहीं होते । "

या

बेलिबास आये थे इस जहान में ,

एक कफ़न के लिए इतना संघर्ष करना पड़ा ।

जैसी अलग तरह की कवितायें और शेर अब क्यों नहीं लिखे जा रहे ? क्यों राम और श्याम एक ही तरह की कविताएं लिख रहे हैं ? ये माना कि मुहब्बत हम सबके जीवन में पलट-पलटकर आती है। आरम्भिक दिनों की कविता और शायरी सबकी एक जैसी हो सकती है-"तुम मेरी चाह हो/तुम मेरी राह हो । तुम मेरी वाह हो/तुम मेरी आह हो ," जो भी , पर लिखते -लिखते जमाना बीत जाने के बाद भी अगर कविता महीन नहीं हो पाती तो यह कलम, कागज और समय की बर्बादी है । कहानियों में भी यही हो रहा है । कुछेक गिनती के पुरुष कथाकार और पुरूषों से थोड़ी अधिक मात्रा में उम्मदराज महिला कथाकारों के साथ ही ये विधा भी खत्म हो सकती है। चूंकि अब की पीढ़ी के पास कहानी का वो शिल्प और भाव नहीं रह गया है। मैंने अपने एक शेर में वो बात कही भी है ।

'तेरी तर्ज-ए-तहरीर मुझको तब कहीं रूहानी लगे,

तू कहानी कहे तो कविता लगे और कविता कहे तो कहानी लगे ।

आज की कविता और शायरी या तो एक सीधी-सीधी कोई बात होती है या अच्छी कविता होती भी है तो वो किसी की नकल होती है । बीच में एक आईना रख दिया जाए तो फ़र्क करना मुश्किल है। कविता को अगर शब्दों से खेलते हुए लिखा जाए तो उसकी नकल हो ही नहीं सकती , नकलची को उसे हूबहू कहना पड़ेगा । मसलन डॉ. बशीर बद्र का एक शेर देखिए -

'जिस बादल की आस में जूड़ा खोल लिया सुहागन ने,

वो पर्वत से सर टकराकर बरस गया सहराओं में ।

या दुष्यंत कुमार का वो चर्चित शेर है -

'कैसे आकाश में सुराख नहीं हो सकता,

एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारों।

मेरा भी एक शेर -

"कोहनी तक कट चुके थे हाथ मेरे जंग भूमि में,

दबाकर कोख में फिर भी अपनी तलवार ले आए।

कविता या किसी भी तरह का साहित्य , पढ़ना मांगता है, सहना मांगता है। संवेदना मांगता है। दया मांगता है, करूणा मांगता है, परोपकार मांगता है और सबसे बड़ी चीज जो मांगता है वह है मुहब्बत। अपने प्रति, जमाने के प्रति और उन सब बेजुबान जीव- जन्तुओं के प्रति, जिनके कल्याण के लिए ईश्वर ने हमें इस संसार में भेजा है ।

-रामअवतार बैरवा

# संस्कृति के संरक्षण में आकाशवाणी की भूमिका

(राष्ट्रीय प्रसारण दिवस , 23 जुलाई पर विशेष)

हम सुबह उठते ही रेडियो पर आकाशवाणी की धुन के बाद सुगम संगीत, भजन सुनते है तो लगता है जैसे पूरी प्रकृति जाग गई है। शांत कलरव वातावरण में आकाशवाणी के सुगम संयोग से जीवन के तमाम संघर्ष मानों पल भर के लिए मंद पड़ जाते हैं । जब तुलसी कृत मानस गान के साथ रामचरित मानस कार्यक्रम प्रसारित होता है तो लगता है जैसी समूची संस्कृति की नींद टूट रही है। भारतीय परम्परा में हम सदा ईश्वर को केवल याद नहीं करते बल्कि उसकी भक्ति में लीन होकर अपनी सारी पीड़ाएं उन्हें सौप देते हैं। सर्व शक्तिशाली शक्ति को याद कर ही हम सदा से दिन की शुरुआत करते आए है। आकाशवाणी भी इसी परम्परा का निर्वहन करता आया है। देश दुनिया की खबरें , जो अपनी भाषागत पहचान के साथ सहजता और सरलता से ओतप्रोत होती हैं। इन ख़बरों के संस्कार मानों कई पीढ़ियों तक चले आ रहे हैं। देवकीनंदन पांडे,रामानुज प्रसाद सिंह, रोशन मैनन, लोतिका रतनम, प्रेमपाल सिंह, बारून हालदार, इंदु वाही, राजेंद्र अग्रवाल, राजेन्द्र चुग, कृष्ण कुमार भार्गव और अशोक वाजपेई सरीखे समाचार वाचकों की आवाज़ सुनते ही लोग के घरो में शांति छा जाती थीं। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक समाचार श्रवण की परंपरा ही केवल व्याप्त न थी बल्कि ये नाम हर घर की पहचान का हिस्सा रहे हैं। शताब्दियां बीतती गई पर यह नाम आज भी अपनी समाचार वाचन कला की पहचान कायम किए हुए हैं। सुंदर सुगम भाषा के जो संस्कार आज भी हमें नज़र आते है , उनमें आकाशवाणी की महती भूमिका हैं , जिसे भुलाया जाना आसान नहीं है।

भारत की तमाम भाषाओं से लेकर गीत - संगीत की तमाम पारम्परिक विधाओं का आकाशवाणी से जब प्रसारण होता है तब दूर दराज़ बैठे लोग भावुक हो जाते हैं। श्रेष्ठ भारत की जो छवि इन कार्यक्रमों से आम जन के दिलों में छाई है , उसका कोई सानी नहीं हो सकता। उस्ताद बिस्मिल्लाह खान, पंडित भीमसेन जोशी, रोशनारा बेगम, उस्ताद निसार हुसैन खान, नीनेंदु वेदकुदुरा, खैय्याम, सतीश भाटिया जैसे कलाकारों और प्रसारणकर्मियों ने अखिल भारतीय संगीत को आकाशवाणी के प्रांगण में गुंजायमान किया। देश भर में अपने क्षेत्र विशेष के कलाकारों का आकाशवाणी ने सदा स्वागत किया हैं। यहाँ जिन भी कलाकारों ने संगीत वादन किया , उनमें बहुत से संगीत वाद्य यंत्र ऐसे थे , जिन्हें बजाने वालों की संख्या सीमित रही , उन यंत्रों और कलाकारों को अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से पुनः जीवित किया गया। साथ ही प्रचलित और अप्रचलित सभी पारंपरिक पद्धतियों को समान महत्व दिया गया। इस तरह निर्मित होती संगीत संस्कृति ने जन - जन तक अमिट छाप छोड़ी।

आकाशवाणी के कार्यक्रमों की अपनी एक भाषिक और सास्कृतिक पंरपरा रही हैं , जिसे वह आज भी अपने कार्यक्रमों के माध्यम से संजो रहा है। जिनमें सर्वभाषा कवि सम्मलेन 1956 से आज भी हर वर्ष वृहद स्तर पर आयोजित होता है। यह भाषाओं का अति सुंदर संगम है , जिसमें 25 जनवरी को रात 10 बजे लगभग 400 कवि एक साथ एक मंच यानी रेडियो पर एकजुट होते हैं और रेडियो की इस अद्भुत साहित्यिक परम्परा को आगे बढ़ाते हैं। इसमें भाग लेने वाला कवि राष्ट्रीय कवि का दर्जा पा जाता है । इतना ही नहीं संगीत का अखिल भारतीय कार्यक्रम, डॉ. राजेंद्र प्रसाद स्मारक व्याख्यान, सरदार पटेल व्याख्यान, लोक संगीत, लोक नृत्य, कवि सम्मेलन, नाटक, वार्तालाप आदि अनेक कार्यक्रम आमंत्रित श्रोताओं के समक्ष आयोजित किये जाते हैं। इन सभी कार्यक्रमों का मूल उद्देश्य भारतीय भाषा, संस्कृति और ज्ञान परम्पराओं को समृद्ध करना है। यह सभी कार्यक्रम भारतीय माटी के बेहद करीब हैं।

भारत की तमाम भाषाओं और बोलियों को इसमें बड़े स्नेह से संजोया गया हैं। भारत के शहरों, गांवों, कस्बों से बेहतरीन कलाकारों को खोजकर आकाशवाणी ने कई कार्यक्रमों के माध्यम से कलाकारों को मंच दिया। माटी के रंग कार्यक्रम में देश की तमाम भाषाओं और बोलियों के लोक गीतकार को सुनना सुखद है। तो वही "चिंतन" कार्यक्रम में हमारे महापुरुषों के जीवन और संघर्ष को जानना। "गांधी चर्चा" में बापू के जीवन के उन पक्षों पर बात होती है, जिससे आम जन अनभिज्ञ है . इसी तरह देश के तमाम सामाजिक कार्यकर्ताओं, विद्वानों, राजनीतिज्ञों, अध्यापकों, कलाकारों, खिलाड़ियों आदि के इतिहास को आकशवाणी ने अपने संग्रहालय में संजो कर रखा है। कृषि दर्शन में खेती से जुड़े हर प्रश्न और उनके जवाब सुनना तो मानों आम जन को खेती की जानकारी और समझ दे जाता है। साथ ही हवा महल, आजादी का सफ़र, मंथन, अभ्यास, धरोहर, बापू की बात, संवाद, जानना जरुरी है ? अफ़वाह नहीं सच्चाई जानिए, मनी मैटर्स, संस्कृत वार्ता, सामयिकी और साहित्यिकी कार्यक्रम में साहित्य की तमाम विधाओं, विमर्शों पर बात होती हैं और लेखकों, आलोचकों की आपस में मुलाक़ात होती है फिर लेखकों की रचनाओं, पाठकों से उनको होने वाली शिकायते भी शामिल होती हैं। इस तरह नाटक, रूपक, झलकी, भेंटवार्ता जैसी तमाम विधाओं में निर्मित कार्यक्रमों की बुनियाद में रहे यहां के कुशल प्रसारणकर्मी जिनका नाता साहित्य की गहनतम निधि से रहा है। सुमित्रानंदन पंत से लेकर विष्णु प्रभाकर, इलाचंद जोशी, भगवतीचरण वर्मा, डॉ.हरिवंशराय बच्चन, उपेंद्रनाथ अश्क, अज्ञेय, भवानी प्रसाद मिश्र, डॉ. नगेंद्र, डॉ. जगदीश चंद्र माथुर, गिरिजा कुमार माथुर, प्रभाकर माचवे, भारत भूषण अग्रवाल, नरेश मेहता, फणीश्वरनाथ रेणु, देवराज दिनेश, कृष्ण चंद्र शर्मा 'भिक्खु' , रमानाथ अवस्थी, पं. विद्यानिवास मिश्र, डॉ. धर्मवीर भारती, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, वीरेंद्र मिश्र, कमलेश्वर, मनोहर श्याम जोशी, आर.के शर्मा उदभ्रांत, अलका पाठक, दुष्यंत कुमार, मुद्राराक्षस, नंद भारद्वाज, गोपाल दास, बालक राम नागर, लीलाधर मंडलोई, लक्ष्मी शंकर वाजपेयी, गंगेश गुंजन, सोमदत्त शर्मा, डॉ. हरी सिंह

पाल ,राम अवतार बैरवा आदि ने इस माध्यम को अपना ज्ञान और अनुभव दिया है।

भारत की हर धड़कन से रूबरू करवाती है आकाशवाणी की वार्ता संस्कृति। यह वार्ताएं हमें चिन्तन की तमाम परंपराओं से जोड़ती है । कभी जागरूक करती है तो कभी सजग, कभी हतप्रभ तो कभी निराश कर जाती है। जीवन के आशा और निराशाओं के तमाम पक्ष जब श्रोता सुनते हैं तो वह भी इस वार्ता संस्कृति के इतिहास का अहम् हिस्सा बन जाते हैं। मेलविल डिमोलो, इकराम राजस्थानी, वीर सक्सेना, वीरेन मुंशी, राजीव सक्सेना, उमेश दीक्षित, डॉ कमाल अहमद सिद्दीकी, शिवसागर मिश्र, सत्येन्द्र शरत, राजीव शुक्ला , ऋतु राजपूत, ललिता चतुर्वेदी, मनोज मयंकर और जैनेन्द्र सिंह ने अपनी आवाज़ से भारत की नवीन भाषिक संस्कृति को निर्मित किया है। आज जेनेंद्र सिंह जब कभी जैन धर्म के विज्ञान पर बात करते हैं तो कभी रामसेतु के ऐतिहासिक तथ्यों की बात करते हैं कभी दिव्यांगों, दृष्टिबाधितों की भाषा और संप्रेक्षण पर चर्चा करते हैं तो कभी नामी हस्तियों के संघर्ष से रूबरू करवाते हैं कभी राष्ट्रीय उत्सवों का आंखों देखा हाल सुनाते हैं। जैनेंद्र सिंह सरीखे आकाशवाणी के तमाम प्रस्तोता हमें इसी तरह कभी खुश कभी उत्साहित तो कभी जीवन के तमाम रंगों से लबरेज करते रहे हैं। वही गीत संगीत के साथ जीवन के तमाम मुद्दों पर बात करते यूनुस खान, मधुमालती, रतन सिंध, बालकराम नागर, अलका पाठक,निर्मला अग्रवाल, आर बी एल माथुर, करूणा श्रीवास्तव, गिरीश चतुर्वेदी, सत्येन्द्र शरत, कमल दत्त, सुदर्शन कुमार, हसन अजीज, अरूण सिंहा, चिरंजीत, डॉ. राजश्री त्रिवेदी, सुजाता रथ, आसकरण शर्मा, मधुकर गंगाधर, गिरीश चतुर्वेदी, कमल शर्मा आदि आज भी संस्कृति के संवाहक के रूप में याद किए जाते है।

भारत के सभी खेल प्रेमी कई शताब्दियों से रेडियो पर खेलों का आँखों देखा सुनते आए हैं। उन पलों को जब भी याद किया जाता है तब जसदेव सिंह का नाम याद आने लगता हैं। जसदेव सिंह ने हिंदी रेडियो कमेंट्री को नई भाषा और नया कलेवर दिया। खेल कमेंटेटर के रूप में उनकी प्रभावमय भाषा का

आज भी कोई सानी नहीं है । उनकी कमेंट्री को सुनकर जब मोहल्ले, कस्बों, गांवों, शहरों में लोग एक साथ मिलकर खेल का आनंद लेते थे तो भीतर ही भीतर खेल संस्कृति के आधुनिक अंकुर भी प्रस्फुटित हुए। वही आकाशवाणी से आज जब हर महीने के आखिरी रविवार को हमारे माननीय प्रधानमंत्री 'मन की बात' करते हैं तो मानों हर सांस्कृतिक, सामाजिक पहल आंदोलन का रूप लेकर जन-जन को उत्साह से भर देती है। यह सभी कार्यक्रम आकाशवाणी की धरोहर है।

रेडियों पर आवाज ही आवाज है । बेहतर जिंदगी की और सिर्फ इंसानों की ही नहीं बल्कि हर उस चीज की आवाज जो इस दुनिया में है नदी, सागर, आंधी-तूफान, पशु-पक्षी, और इन सभी आवाजों को पेश करने का नाम है आकाशवाणी। संस्कृति, कलाओं और विचारों का ऐसा अभिलेखागार दुनिया में कहीं नहीं है। लोक जीवन, लोक भाषा और लोक संस्कृति के संरक्षण संवर्धन में इसकी भूमिका का धूमिल होना आसान नहीं है। यह एक ऐसे श्रव्य माध्यम से जो एक छोटा सा जादू का बॉक्स जरूर है पर भारतीय संस्कृति को जीवन के करीब लाने का माध्यम हैं।

--कीर्ति बैद
शोध छात्रा (आकाशवाणी)
हिंदी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्याल।

# राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भारतीय भाषाओं सम्बन्धी अनुशंषाएं

किसी भी समाज की प्रगति वहाँ के योग्य नागरिकों पर निर्भर करती है और नागरिकों की योग्यता शिक्षा पर निर्भर करती है इसलिए प्रत्येक राष्ट्र की सरकारें शिक्षा पर विशेष रूप से ध्यान देती हैं। शिक्षा में कहां खामियी हैं और कहां -कहां शिक्षा को विस्तार दिया जा सकता है इन सब बातों को लेकर सचेत भी रहती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के केन्द्रीय मंत्रिमंडल से अनुमोदन के साथ ही एक बेहतर समसामयिक शिक्षा के व्यवहार में आने की उम्मीद है। यह नीति लगभग 5 वर्ष की तैयारी के बाद सामने आई है। स्वतंत्रता के पश्चात भारत में अबतक तीन शिक्षा नीतियां बनी हैं। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद का यह पहला राष्ट्रीय प्रयास है जिसमें भारतीय भाषाओं के बारे में समग्रता से विचार किया गया है एवं स्कूली शिक्षा को क्षेत्रिय भाषा में देने की योजना बनाई गई है। वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति की दृष्टि भारतीय मूल्यों से विकसित शिक्षा प्रणाली है।

इसरों के पूर्व अध्यक्ष के. कस्तूरी रंगन की अध्यक्षता में एक समीति बनाई गई। इस समीति ने शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन लाने के लिए, उसको वर्तमान समाज से जोड़ने के लिए शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया । विभिन्न वर्गों से रचनात्मक सुझाव लिए गये। सबके सुझाव को केन्द्र में रखते हुए वर्तमान शिक्षानीति का प्रारूप तैयार किया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भारतीय भाषाओं संबन्धी अनुशंषा का महत्व, उद्देश्य व महत्वपूर्ण बातों के बारे में चर्चा करने से पूर्व की शिक्षा नीतियों के बारे में जान लेना जरूरी है जिससे हम यह जान सकें कि शिक्षा नीति में परिवर्तन

की जरूरत क्या थी, वर्तमान परिवेश में यह शिक्षा नीति हमे हमारी भाषाओं से जोड़ने में कितना सफल होगी।

प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 में कोठारी आयोग( 1964-66 ) की सिफारिसों पर आधारित था। शिक्षा राष्ट्रीय महत्व का विषय था। 14 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों के लिए अनिवार्य शिक्षा का लक्ष्य था । माध्यमिक स्तर पर 'त्रिभाषा सूत्र' लागू किया गया। शिक्षा पर केन्द्रीय बजट का 6% व्यय करने का भी लक्ष्य था।

दूसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में निर्मित हुई और 1992 में संशोधित । शिक्षा में समानता का अवसर दिया गया। स्त्रियों, अनुसूचित जाति, जनजातियों को समान शैक्षिक अवसर दिया गया। प्राथमिक स्तर पर मूलभूत चीजों जैसे ब्लैकबोर्ड आदि की व्यवस्था की गई। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय और पत्राचार विश्वविद्यालयों एवं पाठ्यक्रमों का विस्तार किया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मातृभाषा को अधिगम का माध्यम बनाए जाने का निर्णय बहुत ही साहसिक है। इससे बच्चों के लिए जो शिक्षा बोझिल हो गई थी वह रूचिकर होगी। रट्टा पद्धति की जगह मौलिकता का विकास होगा। व्यक्तित्व का नैसर्गिक विकास होगा। अपनी संस्कृति के प्रति सजगता व अन्य संस्कृतियों को जानने की उत्सुकता भी उत्पन्न होगी । बच्चों में आत्मसम्मान व आत्मविश्वास की भावना जागृत होगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 समान रूप से भारतीय भाषाओं की चिन्ता करती है। हमारी सभ्यता मूलक दृष्टि अनेक भाषाओं तथा बोलियों में विद्यमान लोक साहित्य, लोक कला, लोक संगीत, लोक कथा आदि से समृद्ध हुई है। इस प्रस्तावित कार्ययोजना में आठवीं अनुसूची की सभी भाषाओं की पृथक अकादमी की स्थापना, भाषाओं के शब्दकोशों का अद्यतनीकरण और इस हेतु कार्यदलों का गठन, प्रयोजनमूलक भाषा कार्यक्रमों को विश्वविद्यालयों में प्रोत्साहन, मानकीकृत पारिभाषिक शब्दावली के अधिकाधिक प्रयोग को प्रोत्साहित करने की योजना का निर्माण, समाज विज्ञानों तथा भौतिक विज्ञानों में भारतीय भाषाओं में दक्ष एवं वर्तमान में कार्यरत शिक्षकों को चिन्हित

करना, बहुभाषी शिक्षकों को अनुवाद कार्य योजना में संलग्न किया जाना। भारत के सांस्कृतिक वैभव का वैश्विक दिग्दर्शन कराने वाली संस्कृत का अज्ञान भारतीयता का अज्ञान है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति इस महत्वपूर्ण प्रश्न को सकारात्मक रूप से संबोधित करती है। पांडुलिपियों का एकत्रीकरण तथा संरक्षण सभी शिक्षण संस्थाओं के शोधकर्ताओं के लिए सहायक सिद्ध होगा। भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठतम रचनाओं के अन्य भाषाओं में अनुवाद तथा उनकी पुस्तकालयों में उपलब्धता सुनिश्चित कराना । कार्यालयी प्रयोग में हिंदी पर विशेष बल दिया जाना आदि प्रमुख है।

समग्र रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारतीय भाषाओं के प्रति संवेदनशील है। समय के साथ परिवर्तन अनिवार्य है। नई शिक्षा नीति से शिक्षा रोजगारोन्मुखी होगी। शिक्षा को सार्वभौम बनाना जिससे शिक्षा सभी के लिए सुलग हो । प्रतिभा का पलायन रोका जा सकेगा। 2030 तक शिक्षा में 100% की वरीयता के साथ पूर्व-विद्यालय से माध्यमिक स्तर तक शिक्षा के सार्वभौमिकरण का लक्ष्य। स्कूलों का परिदृश्य, पाठ्य गतिविधियों और व्यावसायिक शिक्षा के बीच के अन्तर को मिटाने की कोशिश करना। उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात को 2035 तक 50% तक बढ़ा दिया गया है। उच्च शिक्षा पाठ्यक्रमों में विषयों की विविधता होगी। सॉलिड रिसर्च सिस्टम को बढ़ावा देने के लिए नेशनल रिसर्च फाउंडेशन की स्थापना की जायेगी। 21वीं सदी के परिदृश्य के अनुकूल स्कूल और कालेज की शिक्षा को समग्र बनाते हुए भारत को एक ज्ञान आधारित जीवंत समाज और प्रत्येक छात्र में निहित अद्वितीय क्षमता को सामने लाना है। प्राथमिक और उच्च शिक्षा दोनों में बहुभाषावाद को बढ़ावा देना। सैद्धांतिक समझ पर जोर एवं रचनात्मकता और तार्किक सोच का विकास करना। सीखने के लिए सतत् मूल्यांकन पर जोर एवं तकनीकी विषयों में उपयोग पर बल दिया गया।

शिक्षा में त्रिभाषा सूत्र को लागू करने का पुनः प्रतिबद्धता व्यक्त की गई है। क्योंकि देश के कुछ राज्य अभी तक इसका अमल नहीं कर रहे हैं। साथ ही त्रिभाषा नीति की जो भावना थी की उत्तर के राज्य अर्थात हिन्दी भाषी राज्य के छात्र अन्य राज्यों की एक भाषा सीखेंगे और अहिंदी भाषी राज्यों के छात्र

हिन्दी सीखेंगे परन्तु यह व्यवहार में नहीं लाया जा सका सिर्फ कागजों में रह गया। इस हेतु नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं के शिक्षण को बढ़ावा देने हेतु राज्य परस्पर अनुबंध कर भाषा शिक्षकों का आदान प्रदान कर सकते हैं। हमारे देश में भाषा को लेकर कई भ्रम फैले हुए हैं। कई राज्यों में उच्च माध्यमिक स्तर पर विज्ञान और गणित अंग्रेजी के माध्यम से पढ़ाया जा रहा है। नई शिक्षा नीति के लागू होने पर कई स्तरों पर सुधार होगा। अपनी मातृभाषा के प्रति सम्मान का भाव जागृत होगा । भारत अपनी संस्कृति शिक्षा में और भी समृद्ध होगा।

विश्व बैंक ने 2020 ह्यूमन कैपिटल इंडेक्स में 174 देशों का डाटा लिया है। नई शिक्षा नीति ने यह उम्मीद जगाई है कि हम यहाँ से 50वें,10वें और 1वें तक पहुंच सकते हैं व ऐसे ही आगे बढ़ सकते हैं। जब किसी भी विषय को बोझिल व गूढ भाषा से प्रिय व सहज भाषा की ओर ले जायेगें तो स्वतः ही शिक्षा का विस्तार होगा और विश्व रैंकिंग में भारत की शिक्षा आगे की ओर अग्रसर होगी। आनंद का विषय यह भी है कि अखिल भारतीय तकनीकि शिक्षा परिषद ने इंजीनियरिंग का पाठ्यक्रम आठ भाषा में तैयार करके इसके क्रियान्वयन पर ठोस कार्य प्रारम्भ किया है।

भारत में साक्षरता के मामले में पुरुष व महिला में काफी अन्तर है। गांव और शहर में बहुत अन्तर है। 2011की जनगणना के अनुसार ग्रामीण इलाकों में साक्षरता दर 73%5 है जबकि शहरी इलाकों में वह 87 %है। अब नई शिक्षा नीति के अनुसार प्राथमिक शिक्षा क्षेत्रीय भाषाओं में दी जायेगी इससे बच्चों में रूचि पैदा होगी। शिक्षा बोझिल व क्लिष्ट नहीं होगी। अधिक से अधिक लोगों तक शिक्षा का विस्तार होगा। एक तमिल भाषी बच्चे को जब तमिल में पढ़ने को मिलेगा, भोजपुरी क्षेत्र के बच्चे को भोजपुरी भाषा में पढ़ने को मिलेगा, ऐसे ही जब तमाम क्षेत्रीय भाषाओं में लोगों को पढ़ने का अवसर मिलेगा तो इससे विषय में ही उसका ज्ञान नहीं बढ़ेगा बल्कि संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास होगा, मौलिकता आएगी, रचनात्मक विकास होगा।

नई शिक्षा नीति गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए समान व समावेशीपहुँच को ही अपने केन्द्र में नहीं रखा बल्कि सार्वभौमिक साक्षरता हासिल करना भी

उसका एक बड़ा लक्ष्य है। इस पूरे विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से सार्वभौमिक साक्षरता के एक बड़े अन्तर को पाटने के लिए एक सशक्त मंच तैयार किया गया है। अब देखना यह है कि इसको लागू करने में हम कितना सफल होते हैं।

सरिता
शोध छात्रा,हिंदी विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

# कन्यादान किसका और क्यों

वैदिक काल से ही यह प्रथा चली आ रही है कि कन्या के विवाह के समय माता पिता कन्यादान की रस्म करते हैं। पं. विधि-विधान से यह रस्म करवाते थे। जिसका अर्थ यह है कि माता पिता ने जन्म देकर बीस-पच्चीस साल तक पाल पोस कर, पढ़ा-लिखा कर कन्या को बढ़ा किया और फिर विवाह करके किसी अनजान व्यक्ति को हमेशा- हमेशा के लिए दान कर दिया। कन्या के जन्म लेते ही माता-पिता उसको पराया धन समझकर पालते पोसते थे इसलिए बेटे की तुलना में उसके पालन पोषण में कमी रखी जाती है।बचपन से बेटी के मन मस्तिष्क में यह बात बैठा दी जाती थी कि तुम पराया धन हो, तुम्हें ससुराल जाना है। ऐसा मत करो वैसा मत करो, और फिर विवाह के बाद विदाई के शब्द तो बेटी के हृदय को विद्दीर्ण करने वाले होते थे। बेटा- डोली हमारे घर निकली है अब अर्थी ससुराल से निकलनी चाहिए। उस समय किसी ने यह सोचने की कोशिश भी न की होगी कि ऐसे शब्दों से लड़की पर क्या बितती होगी। एक ही पल में उस परिवार से रिश्ता खत्म हो गया। आँखें खोलते ही जिस परिवार को देखा था। वह कितनी असहाय और अकेला महसूस करती होगी,किसी ने नहीं सोचा होगा।

अब जब वह ससुराल आ जाती है। तब शुरू होता है उसके जीवन का दर्दनाक अध्याय। अनजान और नये लोगों के बीच उनके हुक्म का पालन करती हुई, सभी तरह के अत्याचारों को सहती है पर शिकायत किस से करें ? माता पिता ने तो दान कर दिया है। अब इस दुनिया

में उसका अपना है कौन ? माता-पिता ने तो विदाई के वक्त ही कह दिया था कि तेरी अर्थी ही ससुराल से निकलनी चाहिए।

एक समय ऐसा आता है कि वह अत्याचार सहते सहते थककर प्यार को तरस जाती है। उससे कोई दो मीठे बोल बोलने वाला भी नहीं होता है। वह टूट जाती है। उसे लगता है कि अब इस संसार में उसका कोई नहीं है। आखिर होती तो वह भी बीस-पच्चीस साल की बच्ची ही है। तब उसे एक ही रास्ता नजर आता है आत्महत्या।

इस तरह घुट- घुट के जीने से तो अच्छा है कि अपना जीवन ही समाप्त कर दूँ ,और फिर मेरे रहने या न रहने से किसी को क्या फर्क पड़ेगा । मुझे तो दान कर दिया गया है और इन्हीं विचारों में डूबे रहकर एक दिन वह अपनी जीवन लीला समाप्त कर देती है।

अब प्रश्न यह उठता है कि विवाह के समय बेटी का कन्यादान क्यों किया जाता है, क्या बेटी कोई वस्तु है,या पशु है ? जिसका हम दान कर देते हैं। हम पुरानी मान्यताओं को आँख बंद करके आत्मसात करते चलते हैं। कभी पलट कर नहीं सोचते कि हम जो कर रहे हैं। उसमें कितनी वैज्ञानिकता है। अपने अंग को कोई कैसे दान कर सकता है। विवाह करना तो उचित है पर दान करना कहां का औचित्य है।

विदाई के समय माता-पिता को कहना चाहिए बेटा हमने तुम्हारे गृहस्थ जीवन के लिए तुम्हारा विवाह किया है। तुम्हारा दान नहीं किया है। तुम कभी परायी नहीं हो सकतीं। तुम हमारे जिगर का टुकड़ा हो, हमारी बेटी हो और हमेशा रहोगी। जब कभी तुम्हें दर्द हो, तो हमें तुरंत सूचित करना हम दौड़े चले आएगें, पर गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के लिए तुम्हें अपना अलग घर बसाना होगा। हम हर पल तुम्हारे साथ हैं।

जब इस तरह का संबल बेटी को मिलेगा तो वह विवाह के बाद भी कभी अकेला महसूस नहीं करेगी। वह अपना दर्द माता- पिता के साथ बाँटेगी और आत्महत्या का विचार तो उसके ख्यालों में भी नहीं आयेगा।

कोई अपने विचार किसी पर जबरदस्ती नहीं थोप सकता है। अब यह अपना-अपना विचार है कि कन्यादान करना चाहिए या नहीं, पर मैं अपनी जुड़वा बेटियों का दान कभी नहीं करूँगीं। उपवास रख कर ईश्वर से उनके सुखद वैवाहिक जीवन की कामना करूँगीं। अब फैसला आपके हाथों में है कि आप कन्यादान करना चाहते हैं या संस्कार दान।

डॉ. निशा नंदिनी भारतीय
तिनसुकिया, असम

# उधार

धंसू अपने घर के छप्पर के नीचे बैठे बैठे कुछ बड़बड़ाए जा रहा था। 'इसी बीच एक आवाज गूंजती है' ए ,जी तुम अकेले बैठे बैठे क्या बड़बड़ा रहे हो? कुछ नहीं कुछ तो आज ऐसा क्या हो गया जिसके कारण तुम पीले पत्ते की तरह कांप रहे हो? तुम जाओ अपना काम करो। हां हां मैं तो चली जाऊंगी, 'लेकिन' लेकिन क्या? तुम्हें तो कुछ भी याद नहीं रहता। क्या याद नहीं रहता, कौन सा पहाड़ टूट पड़ा। कल बाबू जी आ रहे हैं। तो क्या? कुछ न कुछ पैसों की व्यवस्था तो करनी ही पड़ेगी। हां कुछ व्यवस्था करता हूं। 'इतना कहकर धंसू चल पड़ता है' कहां जा रहे हो? पैसों की व्यवस्था करने। ठीक है जल्दी आ जाना। 'धंसू साहूकार के पास पहुंचता है' राम राम धनीराम साहब । आओ कैसे हाल-चाल हैं।

आपकी कृपा से सब ठीक-ठाक है। सुबह आपकी बहू के बाबू जी आ रहे हैं। यह तो अच्छी बात है। तुम क्यों छुईमुई हुए जा रहे हो? आप तो जानते हैं कि खेती की दशा क्या है? "धनीराम तिरोड़ी खुलता है कुछ पैसे निकाल कर देता है" हम आपके पिछले पैसे भी नहीं लौटा पाए यह पैसे किस मुंह से ले। 'कुछ समय बाद धनीराम धंसू के घर आता है'धंसू चारपाई बिछाकर धनीराम को बैठता है। अब तो सब कुछ ठीक-ठाक है।'धनीराम ने पूछा' हां हां आपकी कृपा से सब अच्छा है।

हमें हमारे पैसे लौटा दो मुझे जरूरत है। ' धनीराम ने कहा' हां मालिक बहुत जल्दी फसल आते ही आपके पैसे लौटा दूंगा। फसल! हां हां मालिक फसल आते ही आपको पैसे लौटा दूंगा। किस फसल

की बात कर रहे हो? 'अच्छा मजाक कर लेते हैं आप। धंसू ने धनीराम से कहा' मैं मजाक नहीं कर रहा हूं। मैं सही पूछ रहा हूं। बेटी की शादी में और बेटे की कोचिंग के लिए जो पैसे लिए थे, उसके स्थान पर तुमने अपना खेत मेरे नाम कर दिया था। तुम भूल गए तुमने छोटे और बंटू के सामने स्टांप पर अंगूठा लगाकर मुझे खेत लिख दिया था। 'धंसू को क्रोध आ गया' आप झूठ पर झूठ बोल रहे हो। अच्छा मैं झूठ बोल रहा हूं ।पैसे दूं और झूठा भी बनूं। अभी हो जाएगा दूध का दूध और पानी का पानी, मैं अभी छोटे और बंटू को बुलाता हूं। हां हां बुला लीजिए। 'धंसू आग बबूला हो उठा' तुम्हारा हर बेगार करते रहे उसका कुछ एहसान नहीं। और खेत अपना बताने लगे। 'धनीराम चिल्लाकर बोला' यदि मेरे पैसे दो तीन दिन में नहीं दिए तो तुम्हें घर मेरे नाम घर लिखना ही पड़ेगा। 'इतना कहकर धनीराम चल पड़ता है' धंसू यह बात सुनकर अपना आपा खो बैठता है और सूखी लकड़ी उठाकर धनीराम पर झपट पड़ता।

भास्कर सिंह माणिक, कोंच

# रसूख़दार

उस छोटे कस्बे के बीच से बहती करवन नदी में भले ही ताजे पानी की कलकल न रही हो, मगर उस कस्बे के कुछ लोग आज भी नदी के ताजे पानी जैसे स्वच्छ और निर्मल हृदय के हैं।

उनमें से ही एक नाम है चौधरी राजेन्द्र सिंह, चौधरी साहब को वैसे तो उनके मूल नाम से कम ही लोग पहचानते हैं, लेकिन चौधरी साहब के नाम से उन्हें कस्बे के अधिकतर लोग जानते हैं। चौधरी साहब कस्बे के रसूखदार जो ठहरे।

मेरा परिचय चौधरी साहब से बहुत पुराना है। इतना पुराना कि, जितना पुराना मैं खुद हूँ। मुझे बचपन में तो इस बात से कोई लेना देना ही नहीं था, कि चौधरी साहब हैं क्या? मैं तो अपनी बाल जिज्ञासा के साथ पहुँच जाता उनके घर और दिन भर वहीं खेलता और खाता।

वह अपनी ही तहसील में रजिस्ट्रार कानूनगो के पद पर आसीन, लेखपाल, जिला संघ के पूर्व अध्यक्ष। उनकी अपने कार्य के प्रति ईमानदारी ही उनकी रसूखदारी को और बढ़ा रही थी। अब मैं बारहवीं में पढ़ रहा था। समाज और दुनियाँ को समझने की समझ मुझमें आ गई थी। समाज ही वास्तविकता में हमारा आईना है। समाज हमें वैसा बताता और दिखाता है, जैसे वास्तव में हम हैं। क्योंकि दीवार पर टंगा आईना हमारे उस बहरुपियेपन को दिखाता है, जिसे हम उसमें देखना चाहते हैं। मगर समाज हमारे सामने प्रस्तुत करता है, हमारा असल चेहरा। वास्तव में, चौधरी साहब ने

जो चेहरा देखा था, वह समाज के आईने में देखा था। जिस कारण वह एक मानवीयता से परिपूर्ण स्वरुप था।

मेरा, चौधरी साहब के घर लगभग प्रत्येक दिन आना जाना लगा रहता। उनका बेटा अरुण मेरे साथ ही पढ़ता था। जिस कारण मैं उनके घर का एक हिस्सा हो गया। घर की लगभग सभी बातें मुझे मालूम चल जाती। कस्बे के दूसरे छोर पर बना उनका घर मुझे हमेशा सकून देता। जब मैं, अपने घर में अकेला महसूस करता बस पहुँच जाता उनके घर। यह सिलसिला लगभग आज भी ज्यों का त्यों जारी है। चौधरी साहब का, अपने काम के साथ-साथ परिवार और समाज के साथ समायोजन बहुत गजब का था। कभी-कभी किसी काम से मेरा तहसील पर भी आना-जाना होता, तो मैं, चौधरी साहब के ऑफिस में जाकर घण्टों बैठा रहता और उनकी अपने काम के प्रति निष्ठा और ईमानदारी देखता। वह अपने काम से बहुत खुश रहते। बस उन्हें इसी बात का डर रहता कि कभी कोई उनके किए काम पर प्रश्न चिन्ह ना लगा दे?

सरल और शान्त स्वभाव के चौधरी साहब को मैंने गुस्सा करते कभी नहीं देखा। बात कितनी भी बड़ी हो, वह शान्त ही रहते। वह चाहे घर हो या ऑफिस्। एक बार, जब मैं, उनके ऑफिस में बैठा था, तभी एक बूढा व्यक्ति जिसकी उम्र लगभग 70 साल होगी, हाथ में एक पुराना नक्शा लिए वहाँ पहुँचा। चौधरी साहब ने इशारे से उसे पास में ही कुर्सी पर बैठ जाने को कहा। क्योंकि वह खुद किसी पत्रांक में कुछ दर्ज कर रहे थे। लगभग 10 मिनट बाद जब वह अपने काम से फ्री हुए, तो उन्होंने उस बूढे व्यक्ति से आने का कारण पूछा। व्यक्ति ने, अपने हाथ का नक्शा उनके सामने खिसका दिया। नक्शा देखते ही चौधरी साहब ने नक्शे पर अंगुली रखकर, खेतों की मेड़बंदी समझाई और वह व्यक्ति सब कुछ ऐसे जानते हुए जैसे नक्शा उसी व्यक्ति ने खुद बनाया है, वहाँ से चला गया। तब उन्होंने मुझसे आने का कारण पूछा, तो मैंने अपने कार्य की इच्छा

व्यक्त कर दी। वह तुरंत खड़े हुए और एक दूसरे ऑफिस में जाकर बोले "यै हमारौ ही बालक है जाकौ जौ काम है भाई करि दैओ"। लगभग 20 मिनट बाद मुझे जो कागज़ चाहिए था, मुझे मिल गया। उनका, अपने पास काम से आये, हर एक किसान के प्रति ऐसा व्यवहार होता, जैसा कि शिशु के साथ उसकी माँ का होता है। उनकी नजरों में हमेशा किसान एक अबोध बच्चे जैसा रहा, जिसे सुरक्षित रखने के लिए अटूट प्रेम की आवश्यकता होती है। उनका मानना था, कि किसान तभी सुरक्षित है, जब हम उसके साथ हैं। क्योंकि अगर हमने उसे, उसकी बात समझा दी, तो वह छोटी-छोटी बातों को लेकर होने वाले बड़े-बड़े विवादों से सदैव बचा रहेगा।

चौधरी साहब की काम करने की प्रक्रिया को देखते हुए मुझे 25 वर्ष हो गए। मैंने उन्हें इतने लम्बे समय में कभी अपने ऑफिस के लिए घर से देर से जाते नहीं देखा। उनको मैंने जैसा देखा था, वह आज भी बिल्कुल वैसे ही हैं। शान्त और शालीन। उनके पास बैठ कर एक अजब सा अहसास जाग उठता है। अहसास, अपने काम के प्रति प्रेम का।

सुरजीत मान जलईया सिंह

# देवदासी

“अम्मा ये देवदासी क्या होती है?” चूल्हे की आग भड़काने के लिए फूँक मारते मारते अम्मा अपनी सोलह साल की बेटी लाली की आवाज़ सुनकर रुक गयी। “काहे?”अम्मा गरजी “ये फ़ालतू की पंचायत का टेम ना है, जा तय्यार हो जा बड़े मंदिर जाना है “ बड़ी बड़ी आँखे करके अम्मा बोली लाली हज़ारों सवाल मन में लिए चुपचाप वहाँ से चली गयी। भगवान के सामने हरे रंग की चोली और लेंगा पहनकर लाली बैठी थी।गिले बालों से झरता पानी और आँखों से बरसता पानी उसके कोमल तन और मन को भिगो रहा था।

पूजा सम्पन्न हुयी और लाली आज देवदासी बन गयी। तभी वहाँ मंदिर के मालिक पधारे आशीर्वाद लेने अम्मा उसे लगभग घसीटते हुए मालिक के पास ले आयी।मालिक उसका रूप देखकर दंग रह गए हरे रंग में जैसे वो प्रकृति की देवी लग रही थी। मालिक के नज़रों में कई भाव गुज़र गए। आज लाली बहुत थक गयी थी,सुबह से लेकर रात तक काम और”काम” ने उसे पूरा निचोड़ दिया था।

मंदिर की सफ़ाई,पूजा,भजन,कीर्तन फिर द्वार द्वार भिक्षा माँगना,फिर मालिक के घर का काम और फिर रात में मालिक के साथ.....उसके सपने,भावना के साथ साथ बदन और मन सब टूटकर बिखर रहे थे। सोचने में मजबूर हो गयी के मैं भगवान की दासी हूँ या ...मालिक की ग़ुलाम ?????? कैसी प्रथा जो परंपरा की ग्वाही देकर निभाने को मजबूर करती है!!!!!

क्या मैं सच में देवदासी हूँ या मालिक जैसे ठेकेदारों की सोची समझी साज़िश का मोहरा जिसे ग़ुलाम बनाकर रखेल बना दिया जाता है? आज भी लाली के मन में अनगिनत सवाल थे पर इसका जवाब किसी के पास नहीं था ....

सुवर्णा परतानी
हैदराबाद

# मीरजापुर के इतिहास में पण्डित राम गरीब चौबे की भूमिका

पण्डित रामगरीब चौबे का जन्म मीरजापुर के गोपालपुर गांव में हुआ था। इन्होंने अपनी शिक्षा प्रेसिडेंसी कालेज कलकत्ता से पूर्ण किया। बेरोजगारी के अभाव में चौबे जी आचार्य रामचंद्र शुक्ल के पिता चन्द्रबली शुक्ल के घर पर ही रहते थे। मीरजापुर में चन्द्रबली शुक्ल स्थानीय अदालत में सदर क़ानूनगो के पद पर कार्यरत थे। उनका घर लेखकों और बुद्धिजीवियों का जमावड़ा था, और उनके बेटे राम चंद्र शुक्ल को राम ग़रीब चौबे ने पढ़ाया था। रामचन्द्र शुक्ल बाद में हिंदी साहित्य के इतिहास की व्यापक संकल्पना करने वाले पहले इतिहासकार बने। रामचन्द्र शुक्ल, रामगरीब चौबे के बारे में कहते हैं कि वह सुबह दो या तीन बजे तक पढ़ते-लिखते, फिर पाँच बजे उठकर फिर से शुरू कर देते। उन्नीसवीं सदी के अंत तक, चौबे का पढ़ना और लिखना एक जुनून बन गया था।

औपनिवेशिक भारत के प्रबुद्ध सिविल अधिकारी विलियम क्रुक को जनजाति इतिहास, परंपरा एवं संस्कृति के बारे में खोजबीन करने का कार्य दिया गया। तब विलियम क्रुक को एक ऐसे व्यक्ति की तलाश थी, जो उन्हें स्थानीय ज्ञान, परम्परा, जाति व धर्म के बारे में जमीनी ठेठ जानकारी दे सके। कुछ स्थानीय व्यक्तियों द्वारा विलियम क्रुक को राम गरीब चौबे का नाम सुझाया गया। क्रुक

महोदय ने तुरंत उनको बुलवाया। क्रुक को उस समय किसी सहायक नहीं बल्कि एक सहयोगी की जरूरत थी। राम गरीब चौबे इस पैमाने पर एकदम खरे उतरे। क्रुक के साथ काम करते हुए राम गरीब चौबे ने नोट्स एवं क्वेरीज़ नामक सीरीज पर काम किया। इसके बाद मूल संग्राहक, अनुवादक, स्थानीय रीति- रिवाज, लोक संस्कृति को समाहित करते हुए क्रुक के **1894** में प्रकाशित कार्य 'पोपुलर रिलीजन एवं फोकलोर' में सहयोग दिया। **1896** में विलियम क्रुक के प्रमुख कार्य 'ट्राइब्स एंड कास्ट्स ऑफ़ द नार्थ वेस्टर्न प्रोविंसेज' में सहयोग दिया। विन्ध्य क्षेत्र मीरजापुर की जनजातियों, मान्यताओं, जाति व्यवस्था, धर्म-रीतिरिवाजों पर लिखित यह पुस्तक काफ़ी महत्वपूर्ण है। क्रुक ने ऐतिहासिक नैतिकता के अभाव में केवल दो फूटनोट में ही राम गरीब चौबे का उल्लेख किया है।

पंडित राम ग़रीब चौबे और विलियम क्रुक के बीच संबंध **1896** में एक तरह से समाप्त हो गए थे। विलियम क्रुक इंग्लैंड वापस चले गए और एक विद्वान के रूप में, लोकगीत सोसायटी के सदस्य के रूप में और भारत पर कई पुस्तकों के संपादक के रूप में काम करते रहे। सेवानिवृत्ति के बाद उनका पहला प्रमुख कार्य, थिंग्स इंडियन, **1906** में प्रकाशित हुआ। वर्ष **'1911-1912'** तक फ़ोकलोर सोसाइटी के अध्यक्ष रहे, और **1915** से **1923** में अपनी मृत्यु तक इसकी पत्रिका, फ़ोकलोर के संपादक रहे। रॉयल के एक सदस्य एंथ्रोपोलॉजिकल सोसायटी और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से मानद डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त करने वाले, उन्हें ब्रिटिश अकादमी का सदस्य भी नियुक्त किया गया।

क्रुक के भारत से प्रस्थान के बाद के वर्षों में उनके खतों से ज्ञात होता है कि पंडित राम ग़रीब चौबे ने इतिहासकार वी. ए. स्मिथ की

जो क्रुक के कॉलेज के सहपाठी थे और बाद में भारतीय सिविल सेवा में उनके सहयोगी भी थे उनकी विभिन्न तरीकों से मदद की थी। चौबे जी ने  जी. ए. ग्रियर्सन की परियोजना, लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया के लिए काम किया, जिसे तब जॉर्ज ए. ग्रियर्सन द्वारा चलाया जा रहा था, जो स्मिथ की तरह क्रुक के मित्र और सहयोगी थे। हालाँकि, 1900 तक स्मिथ भी इंग्लैंड वापस चले गए थे, ग्रियर्सन की परियोजना समाप्त हो गई थी, और चौबे अपने गाँव गोपालपुर में बेरोजगार थे।

राम गरीब चौबे का पारंपरिक ज्ञान इस नए पश्चिमी शिक्षा प्रतिमान में व्यवस्थित हो गया था। औपनिवेशिक समाज की सत्ता संरचनाओं में वह एक बाबू, एक सैनिक, एक सुधारवादी, एक वकील, या एक प्रारंभिक स्वतंत्रता सेनानी के रूप में नहीं, बल्कि एक विद्वान के रूप में रहना और काम करना चाहते थे । विलियम क्रुक की ज्यादेतर पांडुलिपियों के लेखन शैली में मिश्रण है।  इससे यह स्पष्ट होता है कि क्रुक महोदय के कार्य अकेले का किया कार्य नहीं था। फिर भी यह सवाल उठता है कि क्रुक महोदय ने राम गरीब चौबे के कार्यों का उचित सम्मान उन्हें नहीं दिया! एक लोककथाकार, स्थानीय विषय विशेषज्ञ राम गरीब चौबे का मीरजापुर के जनजाति इतिहास में उनके योगदानों को भले आज लिखित रूप से कोई पहचान प्राप्त नहीं हो सका लेकिन इतिहास अपने स्मरणों में उनके योगदानों को सदैव सम्मान की दृष्टि से देखेगा।

-प्रवीण कुमार मिश्र 'वशिष्ठ'

# साग़र भरने वाले

दो रोटी को कौन है तरसा मत पूछो
कौन है झूठा कौन है सच्चा मत पूछो

हंसते चेहरे ले कर घूमने वालों की
आँखों में है किस का सदका मत पूछो

महंगी-महंगी जागीरों के वारिस तुम
जंगल-जंगल कौन है भटका मत पूछो

साग़र भरने वाले तिश्ना-लब दिल में
किस की यादों का है झरना मत पूछो

ले कर कौन गया है कौन ले जाएगा
निधि इस दुनिया में क्या किस का मत पूछो

निधि भार्गव मानवी
ईस्ट दिल्ली/कवयित्री/
लेखिका/मंच संचालिका

# भीतर

मुझे कविता में
नया दौर सीखना है।
मुझे मोहब्बत में
अभी और सीखना है।
चिलमलाहट सी होती है
भीतर ही भीतर
नए शब्दों को सीख कर
मुझे नए भावों का आयाम
अभी और सीखना है।
दबी हुई बातें हैं कुछ भीतर
जो दबा देती है
सदैव ही अस्मिता को मेरी
निकालकर उनको बाहर
अभी नया जहान जीना
अभी और सीखना है।

राजीव डोगरा
(हिंदी **अध्यापक**)
**राजकीय** उत्कृष्ट वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
गाहलिया

# साहूकार बड़े हैं

खेत किसानों के, हल बैल किसानों के ।
थे खूब कभी लगते खेल किसानों के ।
साहूकार बड़े हैं बैंक हुए कितने,
नायब लाये कुर्की-मेल किसानों के ।
खेत हुये नीलाम बचा कुछ मूल अभी,
चिंता में छप्पर खपरैल किसानों के ।
हक मांगा तो खूब किये है हाकिम ने,
नाम जिले के थाने जेल किसानों के ।

खूब चला कोल्हू कैसा ये तरक्की का,
निकला है खाली बस तेल किसानों के ।
खेत कभी घर छीन लिये हैं यूँ कहके
होंगे बंगला गाड़ी रेल किसानों के ।
खेल रहे शतरंज सदन में नेता जी,
बेटा हैं सरहद की गैल किसानों के ।

मृदुल कुमार सिंह
महाराजपुर, अलीगढ़

# रिश्ते

रिश्ते महज होने से नहीं,
साथ निभाने से बनते हैं
अपना कहने से नहीं,
अपनापन दिखाने से बनते हैं।
स्वार्थ से नहीं, जीवन के हर पड़ाव पर
साथ निभाने से बनते हैं
रिश्ते एक दूसरे को समझने व समझाने से बनते हैं।
रिश्तों की कदर की जाती है,
ना कि हक़ जताने से बनते हैं
रिश्ते जबरदस्ती नहीं,
प्यार के एहसास से बनते हैं।
रिश्ते अनमोल होते हैं,
ये तो विश्वास से बनते हैं
रिश्ते कड़वाहट से नहीं,
ये मिठास से बनते हैं।
रिश्ते मजबूत, महत्त्व देने से और साथ वक़्त बिताने से बनते हैं।।

नंदिनी चौहान

# ख्यालों में देखा

वो आए मेरी महफिल में रब की मेहरबानी।
महफ़िल हो गई रौशन नाची मैं भी दीवानी।।

साकी ने उठाया था जब जाम निग़ाहों का।
गुस्ताख़ मुहब्बत से हो ही गई शैतानी।।

क्या खूब थी उनकी नजरों में वो हया कातिल।
परदे में निगाहें थी पर उनमें भी हैरानी।।

मैंने भी किया सजदा यूं नजरें झुका अपनी।
मुझको तो लगा जैसे सूरत है ये पहचानी।।

ख्यालों में देखा मैंने उनको यूं तो अक्सर ही।
काटी न गई वो बहकी रात थी तूलानी।।

प्रीती श्रीवास्तव
कल्याणपुर, कानपुर।

# "सामाजिक शोषण"

क्यों जन्मा ये शोषक वर्ग समाज में ,

पनप रहा आज भी इंसान की आवाज में।

समाज में बनाया क्यों शोषक वर्ग को ,

आज भी बोलबाला है यहां शोषक वर्ग का।

न जाने कितनी जानें गईं शोषित वर्ग की ,

लहू से रंगे है कर शोषक वर्ग के ।

आज भी क्यों एहसास नहीं है ,

क्या जन जन का इतिहास नहीं ये?

बहुत हो गया क्या सहते जाओगे?

इतिहास को क्या दोहराते जाओगे?

रखो आत्मबल मिल जाओ मेरी  आवाज में,

क्या है नहीं दम मेरे जज्बात में?

तोड़ दिया था शोषण ने  मेरी आवाज को,

क्या तोड़ पाए वह मेरे विश्वास को?

गवाह बन चुका है मेरा इतिहास,

है उठी आज मेरी आवाज।

ना बुझने दिया मैंने दिया आशा का,

आज भी है रोशन सवेरा उम्मीद का।

उठ रहा है प्रश्न मेरे आह्वान में,

क्यों पनप रहा आज यह इंसान की आवाज में?

सत्य है जन्म लेने वाले का भी अंत होता है,

पता नहीं क्यों अमर बन बैठा है यह समाज में।

पूजा अग्रवाल

# मैं कवि हूं जग के मजलूमों का

मैं कवि नहीं शौकीनों का,
मैं कवि हूं जग के मजलूमों का।
जबतक धरती पर है कोई सितमजदा,
मैं शोषितों के ही पक्ष में लिखूंगा।
मुझे भले न दो कोई सम्मान,
रखो अपना प्रशस्ति पत्र।
पर जो सच है वही मैं बोलूंगा,
हर जुल्म  का पोल मैं खोलूंगा।
यहां हर इंसान अपना ही है,
यहां हर का दुख अपना ही है।
मुझे नहीं चाहिए फूलों का हार,
मुझे चाहिए जुल्मों का अंत।
न शौक मुझे है तालियों का,
है शौक मुझे सच लिखने का।
है शौक रहूं  सितमगर के विरुद्ध,
है शौक दुनिया को एक बनाने का।
मैं कवि नहीं ऐयाशों का,
न कवि हूँ मैं बुजदिलों का।
मैं कवि नहीं शौकीनों का,
मैं कवि हूँ जग के मजलूमों का।

अमरेन्द्र
पचरुखिया,फतुहा,पटना,बिहार

# मुस्कुराना सीखिए

आपने तो कह दिया की मुस्कुराना सीखिए।
जीस्त कहती है कि पहले गम भुलाना सीखिए।
याद उसकी साथ अपने ढेर गम भी लाती है,
याद करना सीखिए के भूल जाना सीखिए।
आँसूओं से दोस्ती अच्छी नहीं लगती मगर,
गम गलत करने का कोई तो बहाना सीखिए।
ओस की बूंदों सी होती है खुशी भी आजकल,
प्यास ही है गर मिटाना तो मिटाना सीखिए।
उसके हिस्से के सबक भी याद थे मुझको सभी,
प्यार में यूँ भी उसे अपना बनाना सीखिए।
वो गया तो दिल मेरा यादों का खंडहर हो गया,
जो कहा करता था खुद को भी सजाना सीखिए।
साथ वो था जब तलक तो जिंदगी भी थी हसीं,
अब तो सागर उसके बिन भी गुनगुनाना सीखिए।

डॉ.रामावतार सागर
कोटा, राजस्थान

# नमन है देश

आओ गाएँ गीत, देशभक्ति की।
झाँकी दिखाएँ, देश शक्ति की।
तिरंगा फहराएँ, इस धरती पर।
सुमन बरसाएँ, माँ भारती पर।।

नमन है देश के, अमर शहीदों।
बलिदानी बनें, हम प्रेरणा दो।
क़ुर्बान होने को, सदा वतन पे।
देशवासियों को, यूँ सिखला दो।।

राष्ट्र के धन्य, वीर जवानों।
सलाम भारत, माँ के दीवानों।
स्वाभिमान आप, से है हमारा।
आज़ादी के हो, आप रखवारा।।
स्वरचित एवम मौलिक द्वारा :-

संतोष कुमार 'अजूबा'
नरकटियागंज, पश्चिमी

# प्रश्न और उत्तर

जिंदगी के थपेड़ों में
गुम हो चुके प्रश्नों को
खोज लेने से क्या होगा
जबकि बहरे हुए समय में
उत्तरों का छोर कहाँ है

स्मृतियों की जुगाली करता
क्लांत होता मन
समय के हारे मूल्यों
और मान्यताओं के दर्द में
समय सिर्फ घड़ियों के
पेंडुलम-सा हिलता है

छटपटाती है कुछ रूहें
आज़ाद होने को
शोर सुनने की ख्वाहिश में
सुन नहीं पाते मन का कोलाहल

जीवन जीने का

टूटता हुआ निश्चय

अहसास करा देता है

कितने बौने हैं हम

और यों

जहाँ के तहां रहते हैं प्रश्न

जहाँ के तहां रहते है प्रश्न !

राजकुमार जैन राजन
चित्रा प्रकाशन
आकोला -312205 (चित्तौड़गढ़)

# मानवता का पद बड़ा

पति पंछी के पर उगे, निखर गया परिवार।
ज्यों सुगनी के पर लगे, बिखर गया संसार।।

पुरुष पौरुष पलित दलित, क्यों न पुरुष आयोग।
उल्टी गंगा बह रही, तिल-तिल तलाक रोग।।

है आनंदित शिक्षित पति,अनपढ़ पत्नी संग।
पढ़ी-लिखी पत्नी करे, पति की गति बदरंग।।

पतिदेव ने पढ़ा लिखा, पत्नी को दी पांख।
'सावन' तिरिया चाल से, पति पर छिड़के साख।।

पत्नी को पोथी दिए, गजा गए पतिदेव।
मुंह के बल ऐसे गिरे, जैसे 'सावन' सेव।।

अपना खोता लेसि के, चिरई फुदके देश।
तोता-खोता ना मिले, 'सावन' बचे क्लेश।

मन से तू संपन्न बन, धन में है सुख नाहिं।
मानवता का पद बड़ा, पद में है कुछ नाहिं।।

-सुनील चौरसिया 'सावन'

# उद्बोधन

ओ, कलम पकड़ने वाले, हाथों में पकड़ो तलवार कभी।
यदि कोई हक छीन रहा, या करना चाहे वार कभी।।

धर्म और न्याय-भाषण से,काम नहीं जब बन पाए,
दुर्बल,वृद्ध और अबला को,दुर्जन कोई आँख दिखाए,
तो खींच धनुष की प्रत्यंचा, कर वाणों की बौछार कभी।
ओ, कलम पकड़ने वाले, हाथों में पकड़ो तलवार कभी।।

राष्ट्र और प्रदेश स्तर पर,धार्मिक अड़चन यदि आए,
लाखों के हित की रोटी को,कोई अकेले ही खाए,
करदे कृतार्थ निजजीवन को,बनजा कल्किअवतारकभी।
ओ, कलम पकड़ने वाले, हाथों में पकड़ो तलवार कभी।।

स्वार्थ निहित यद्यपि जीवन,फिर भी परमार्थ कमाओ,
निजगृह उजड़े नहीं किंतु, बेघर को कहीं बसाओ,
'सत्येन्द्र गुलों के बदले में,अच्छा लगता है खार कभी।
ओ, कलम पकड़ने वाले, हाथों में पकड़ो तलवार कभी।।

सत्येन्द्र नारायण सिंह
मेहशी,सकरा,मुजफ्फरपुर,बिहार।